4 संस्कृत साहित्ये लेखिका: (संस्कृत साहित्य की लेखिकाएँ)

समाजस्य यानं पुरुषैः नारीभिश्च चलति। साहित्येऽपि उभयोः समानं महत्वम्। अधुना सर्वभाषासु साहित्यरचनायां स्त्रियोऽपि तत्पराः सन्ति यशश्च लभन्ते।

समाज की गाड़ी पुरूषों और स्त्रीयों के द्वारा चलती है। साहित्य में भी दोनां का समान महत्व है। आजकल सभी भाषाओं की साहित्य रचना में स्त्रियाँ भी तत्पर हैं और यश भी पा रही है।

संस्कृतसाहित्ये प्राचीनकालादेव साहित्यसमृद्धौ योगदानं न्यूनाधिकं प्राप्यते। पाठेऽस्मिन्नतिप्रसिद्धानां लेखिकानामेव चर्चा वर्तते येन साहित्यनिधिपूरणे तासां योगदानं ज्ञायेत।

संस्कृत साहित्य में प्राचीन काल से ही साहित्य को समृद्ध करने में दोनों का योगदान कम-अधिक के रूप में प्राप्त होता रहा है। इस पाठ में अति प्रसिद्ध लेखिकाओं का ही चर्चा है जिससे साहित्यरूपी खजाना को भरने में उन स्त्रीयों का योगदान के बारे में जानकारी होती है।

विपुलं संस्कृतसाहित्यं विभिन्नैः कविभिः शास्त्रकारैश्च संवर्धितम्। वैदिकालादारभ्य शास्त्राणां काव्यानांञ्च रचने संरक्षणे यथा पुरुषाः दत्तचिताः अभवन् तथैव स्त्रिऽपि दत्तावधानाः प्राप्यन्ते। वैदिकयुगे मन्त्राणां दर्शका न केवला ऋषयः, प्रत्युत ऋषिका अपि सन्ति। ऋग्वेदे चतुर्विंशतिरथर्ववेदे च पञ्च ऋषिकाः मन्त्रदर्शनवत्यो निर्दिश्यन्ते यथा- यमी, अपाला, उर्वशी, इन्द्राणी, वागाम्भृणी इत्यादयः।

विशाल संस्कृत साहित्य अनेक कवियों तथा शास्त्रकारों द्वारा अत्यधिक समृद्ध किया गया। वैदिक काल के आरंभ से ही शास्त्रों तथा काव्यों की रचना और संरक्षण में पुरूष के समान स्त्रीयाँ भी सावधान थी। वैदिक युग में ऋषि एवं ऋषि-पत्नी दोनों ही मंत्रों की रचना करते थे। ऋगवेद में चौबीस और अथर्ववेद में पाँच ऋषि-पत्नियाँ उल्लिखित हैं- यमी, अपाला, उर्वशी, इन्द्राणी, वागाम्भृणी आदि-आदि।

बृहदारण्यकोपनिषदि याज्ञवल्क्यस्य पत्नी मैत्रेयी दार्शनिकरुचिमती वर्णिता यां याज्ञवल्क्य आत्मतत्वं शिक्षयति। जनकस्य सभायां शास्त्रार्थकुशला गार्गी वाचक्नवी तिष्ठति स्म। महाभारतेऽपि जीवनपर्यन्तं वेदान्तानुशीलनपरायाः सुलभाया वर्णनं लभ्यते।

वृहदारण्यक उपनिषद में याज्ञवल्क्य की पत्नी मैत्रेयी दार्शनिक रूप में वर्णित की गई है। जिनको याज्ञवल्क्य जी ने आत्मतत्व की शिक्षा देते हैं। जनक की सभा में शास्त्रार्थ कुशल गार्गी नामक विदुषी रहती थी। महाभारत में भी जीवन-पर्यन्त वेदान्त अध्ययन में स्त्रियाँ रही। यह बात आसानी से वर्णन

में मलती है।

लौकिकसंस्कृतसाहित्ये प्रायेण चत्वारिंशत्कवयित्रीणां सार्धशतं पद्यानि स्फुटरूपेण इतस्ततो लभ्यन्ते। तासु विजयाङ्का प्रथम-कल्पा वर्तते। सा च श्यामवर्णासीदिति पद्येनानेन स्फुटीभवति-

लौकिक संस्कृत साहित्य में प्रायः चालीस कवयित्रीयों का डेढ़ सौ पदें स्पष्टरूप से जहाँ-तहाँ प्राप्त हैं। उनमें विजयाङ्का का प्रथम कल्प है। वह श्यामवर्ण की थी। यह इस पद से स्पष्ट होता है।

नीलोत्पलदलश्यामां विजयाङ्कामजानता।
वृथैव दण्डिना प्रोक्ता 'सर्वशुक्ला सरस्वती'।।

नीले कमल के समान श्यामवर्ण की विजयाङ्का को न जानते हुए सरस्वती को सर्वशुक्ला दण्डी द्वारा व्यर्थ ही कहा गया।

तस्याः कालः अष्टमशतकमित्यनुमीयते। चालुक्यवंशीयस्य चन्द्रादित्यस्य राज्ञी विजयभट्टारिकैव विजयाङ्का इति मन्यते। किञ्च शीला भट्टारिका, देवकुमारिका, रामभद्राम्बा-प्रभृतयो दक्षिणभारतीयाः संस्कृतलेखिकाः स्वस्फुटपद्यैः प्रसिद्धाः।

उनका समय आठवीं शताब्दी अनुमान किया जाता है। अनेक विद्वानों का मानना है कि चालुक्यवंश के राजा चन्द्रादित्य की रानी विजय भट्टारिका ही विजयाङ्का है। कुछ और शीला भट्टारिका, देवकुमारिका, रामभद्राम्बा आदि दक्षिण भारतीय संस्कृत लेखिकाओं की कविताएँ प्रसिद्ध है।

विजयनगरराज्यस्य नरेशाः संस्कृतभाषासंरक्षणाय कृतप्रयासा आसन्निति विदितमेव। तेषामन्तःपुरेऽपि संस्कृतरचनाकुशलाः राज्ञयोऽभवन्। कम्पणरायस्य (चतुर्दशशतकम्) राज्ञी गंगादेवी 'मधुराविजयम्' इति महाकाव्यं स्वस्वामिनो (मदुरै)- विजयघटनामाश्रित्यारचयत्। तत्रालङ्काराणां संनिवेशः आवर्जको वर्तते।

विजयनगर के राजा ने संस्कृत भाषा की रक्षा के लिए जितना प्रयास किया, वह ज्ञात ही है। उनके अन्तःपुर में संस्कृत के कुशल रचनाकार हुए। चौदहवीं शताब्दी में कम्पन राय की रानी गंगा देवी मधुरा विजयम् नामक महाकाव्य की अपने स्वामी विजयघटना के आश्रय में रचना की। उसमें अलंकारां का सुन्दर प्रयोग हुआ है।

तस्मिन्नेव राज्ये षोडशशतके शासनं कुर्वतः अच्युतरायस्य राज्ञी तिरुमलाम्बा वरदाम्बिकापरिणय-नामकं प्रौढ़ं चम्पूकाव्यमरचयत्। तत्र संस्कृतगद्यस्य छटा समस्तपदावल्या ललितपदविन्यासेन चातीव शोभते। संस्कृतसाहित्ये प्रयुक्तं दीर्घतमं समस्तपदमपि तत्रैव लभ्यते।

उनके ही राज्य में सोलहवीं शताब्दी में राज्य करते हुए अच्युत राय की रानी तिरूमलाम्बा ने

वरदाम्बिका परिणय नामक विशाल चम्पुकाव्य की रचना की। उसमें संस्कृत गद्य की छटा तथा सुन्दर पदविन्यास अति रमणीय हैं। संस्कृत साहित्य में लम्बे समस्त पद का प्रयोग उसी में हुआ है।

आधुनिककाले संस्कृतलेखिकासु पण्डिता क्षमाराव (1890-1953 ई०) नामधेया विदुषी अतीव प्रसिद्धा। तया स्वपितुः शंकरपाण्डुरंगपण्डितस्य महतो विदुषो जीवनचरितं 'शंकरचरितम्' इति रचितम्।

आधुनिक काल में संस्कृत लेखिकाओं में पंडित क्षमाराव नाम की विदुषी बहुत प्रसिद्ध है। उन्होनें अपने पिता पंडित शंकर पाण्डुरंग की महान विद्वता जीवन चरित पर 'शंकर चरितम्' की रचना की।

गान्धिदर्शनप्रभाविता सा सत्याग्रहगीता, मीरालहरी, कथामुक्तावली, विचित्रपरिषद्यात्रा, ग्रामज्योतिः इत्यादीन् अनेकान् पद्य-पद्यग्रन्थान् प्रणीतवती। वर्तमानकाले लेखनरतासु कवयित्रीषु पुष्पादीक्षित-वनमाला भवालकर – मिथिलेश कुमारी मिश्र-प्रभृतयोऽनुदिनं संस्कृतसाहित्यं पूरयन्ति।

गाँधी दर्शन से प्रभावित होकर उन्होने सत्याग्रहगीता, मीरालहरी, कथा मुवक्ताली, विचित्र परिषद्यात्रा, ग्रामज्योति इत्यादि अनेक गद्य-पद्य की रचना की। इस समय लेखन कार्य में संलग्न कवित्रियों में पुष्पादीक्षित, वनमाला भवालकर, मिथिलेश कुमारी मिश्र आदि आए दिन संस्कृत साहित्य को पूरा करते है।

1. इस पाठ से हमें क्या संदेश मिलता है ?

उत्तर - इस पाठ के द्वारा संस्कृत साहित्य के विकास में महिलाओं के योगदान के बारे में ज्ञात होता है। वैदिक युग से आधुनिक समय तक ऋषिकाएँ, कवयित्री, लेखिकाएँ संस्कृतसाहित्य के संवर्धन में अतुलनीय सहभागिता प्रदान करती रही हैं। संस्कृत लेखिकाओं की सुदीर्घ परम्परा है। संस्कृत भाषा के उन्नयन एवं पल्लवन में पुरुषों के समतुल्य महिलाएँ भी चलती रही हैं।

2. 'सर्व शुक्ला सरस्वती किसे कहा गया है', और क्यों ?

उत्तर- सर्वशुक्ला सरस्वती, विजयाङ्का को कहा गया है। लौकिक संस्कृत में विजयाङ्का की भूमिका सराहनीय है। उसके पदों की सौष्ठवता देखने में बनती है। । एक असाधारण लेखिका की पराकाष्ठता से प्रभावित होकर ही दण्डी ने उसे अद्भुत सर्वशुक्ला सरस्वती कहा है। विजयाङ्का श्याम वर्ण की थी किन्तु उसकी कृत्तियाँ ज्योतिर्मय थीं। नीलकमल की पंखुड़ियों की तरह विजयाङ्का अपनी रचना में लेखन कला की आभा बिखेरती है ।

3. संस्कृतसाहित्य में दक्षिण भारतीय महिलाओं के योगदानों का वर्णन करें ।

उत्तर - चालुक्य वंश की महारानी विजयभट्टारिका ने विजयाङ्का की रचना कर लौकिक संस्कृत साहित्य में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। लगभग चालीस दक्षिण भरतीय महिलाओं ने एक सौ पचास संस्कृत काव्यों की रचना की है। इन महिलाओं में गंगादेवी, तिरुमलाम्बा, शीलाभट्टारिका, देवकुमारिका, राम भद्राम्बा आदि प्रमुख हैं। इनकी रचनाएँ पद्य में हैं

4. संस्कृतसाहित्ये लेखिकाः पाठ का पाँच वाक्यों में परिचय दें।

उत्तर-संस्कृत की सेवा जिस प्रकार पुरुषों ने की है उसी प्रकार महिलाओं ने भी वैदिक युग से आज तक इसमें भाग लिया है। प्रायः इस विषय की उपेक्षा हुई है। प्रस्तुत पाठ में संक्षिप्त रूप से संस्कृत की प्रमुख लेखिकाओं का उल्लेख किया गया है। उनके योगदान संस्कृत साहित्य के इतिहास में अमर है।

5. संस्कृतसाहित्य में आधुनिक समय के लेखिकाओं के योगदानों की चर्चा करें ।

उत्तर- संस्कृतसाहित्य में आधुनिक समय की लेखिकाओं में पण्डितां क्षमाराव अति प्रसिद्ध हैं। उन्होंने शंकरचरितम्, सत्याग्रहगीता, मीरालहरी, कथामुक्तावली, 'विचित्र-परिषदयात्रा, ग्रामज्योति इत्यादि अनेक गद्य-पद्य ग्रन्थों की रचना की। वर्तमानकाल में लेखनरत कवियित्रों में पुष्पा दीक्षित, वनमाला भवालकर, मिथिलेश कुमारी मिश्र आदि प्रतिदिन संस्कृतसाहित्य को समृद्ध कर रही है।

6. शास्त्र - लेखन एवं रचना-संरक्षण में वैदिककालीन महिलाओं के योगदानों की चर्चा करें।

उत्तर - वैदिककाल में शास्त्र लेखन एवं रचना-संरक्षण में पुरुषों की तरह महिलाओं ने भी काफी योगदान दिया है। ऋग्वेद में चौबीस और अथर्ववेद में पाँच महिलाओं का योगदान है। यमी, अपाला, उर्वशी, इन्द्राणी और वागाम्भृणी वैदिककालीन ऋषिकाएँ भी मंत्रों की दर्शिकाएँ थी ।

7. 'संस्कृतसाहित्ये' लेखिकाः पाठ के आधार पर लेखक के संदेश को स्पष्ट करें।

उत्तर-संस्कृतसाहित्ये लेखिका पाठ में लेखक का स्पष्ट संदेश है कि महिला और पुरुष दोनों के योगदान से ही समाज की गाड़ी चलती है। साहित्य में भी दोनों का समान महत्त्व है। इस पाठ में अति प्रसिद्ध लेखिकाओं की चर्चा है, जिन्होंने साहित्यरूपी खजाने को भरने में अपना योगदान दिया है।

8. संस्कृतसाहित्य में विजयनगर राज्य के योगदानों का वर्णन करें।

उत्तर- विजयनगर राज्य के राजाओं ने संस्कृतसाहित्य के संरक्षण के लिए जो प्रयास किए थे वे सर्वविदित है। उनके अंतःपुर में भी संस्कृत-रचना में कुशल रानियाँ हुईं। इनमें कम्पणराय की रानी गंगादेवी तथा अच्युताराय की रानी तिरुमलाम्बा प्रसिद्ध हैं। इन दोनों रानियों की रचनाओं में समस्त पदावली और ललित पद-विन्यास के कारण संस्कृत-गद्य शोभित होता है।

9. 'संस्कृत साहित्ये लेखिकाः पाठ में लेखक ने क्या विचार व्यक्त किए हैं ?

उत्तर- 'संस्कृतसाहित्ये लेखिका पाठ में लेखक का विचार है कि प्राचीन काल से लेकर आज तक महिलाओं ने संस्कृत साहित्य में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है दक्षिण भारत की महान साहित्यकार महिलाओं ने भी संस्कृत साहित्य को समृद्ध बनाया ।

IMPORTANT OBJECTIVE QUESTION

1. आधुनिक काल को संस्कृत कवयित्री कौन हैं?

(A) तिरुमलम्बा

(B) विजयाङ्का

(C) सुलभा

(D) पण्डिता क्षमा राव

Ans – (D)

2. वर्तमान काल की संस्कृत लेखिका कौन हैं?

(A) गङ्गा देवी

(B) सुलभा

(C) मिथिलेश कुमारी मिश्रा

(D) विजयाङ्का

Ans – (C)

3. 'संस्कृतसाहित्ये लेखिका:' किस प्रकार का पाठ है?

(A) कथा

(B) नाटक

(C) वार्तालाप

(D) निबंध

Ans – (D)

4. अथर्ववेद में कितने ऋषि-पत्नियों का वर्णन है?

(A) 20

(B) 25

(C) 24

(D) 5

Ans – (D)

5. लौकिक संस्कृत साहित्य में कितने कवयित्रियों का वर्णन है?

(A) 30

(B) 40

(C) 25

(D) 50

Ans – (B)

6. लौकिक संस्कृत साहित्य में कवयित्रियों के कितने पद्य है?

(A) 150

(B) 100

(C) 200

(D) 250

Ans – (A)

7. विजयांका का काल किस शताब्दी में माना गया है?

(A) 10 वीं

(B) 12वीं

(C) 8 वीं

(D) 9 वीं

Ans – (C)

8. पण्डिता क्षमा राव द्वारा रचित 'सत्याग्रह गीता किसके दर्शन द्वारा प्रभावित है?

(A) महात्मा गाँधी

(B) जवाहरलाल नेहरू

(C) रानी लक्ष्मीबाई

(D) इन्दिरा गाँधी

Ans – (A)

9. पण्डित क्षमाराव के पिता कौन थे?

(A) पंडित शंकर पांडुरंग

(B) पावल्य

(C) अच्युतराय

(D) कम्पनराय

Ans – (A)

10. क्षमाराव ने किसकी रचना की?

(A) मधुराविजयम्

(B) ग्रामज्योति

(C) शंकरचितम्

(D) नीतिश्लोक

Ans – (C)

11. याज्ञवल्क्य की पत्नी कौन थीं?

(A) मैत्रेयी

(B) सुलभा

(C) देवकुमारिका

(D) रामभद्राम्बा

Ans – (A)

12. याज्ञवल्क्य ने आत्मतत्व को शिक्षा किसको दी थी?

(A) मैत्रेयी को

(B) गागी को

(C) सुलभा को

(D) रामभद्राम्बा को

Ans – (A)

13. याज्ञवल्क्य ने किसकी शिक्षा दी हैं?

(A) ब्रह्म तत्व

(B) संस्कृत साहित्य

(C) आत्मतत्व

(D) गीता

Ans – (C)

14. चालुक्य वंश के राजा कौन थे?

(A) आदित्य

(B) दण्डी

(C) कम्पनराय

(D) चन्द्रादित्य

Ans – (D)

15. चंद्रादित्य की रानी कौन थी?

(A) विजयांका

(B) विजयभट्टारिका

(D) मैत्रेयी

Ans – (B)

16. विजयनगर का राजा किस भाषा का संरक्षण का प्रयास किया?

(A) संस्कृत

(B) हिन्दी

(C) कम्

(D) बला

Ans – (A)

17. मधुराविजयम्' महाकाव्य की रचनाकार कौन थी?

(A) विजयांका

(B) गंगादेवी

(C) रामभद्राम्बा

(D) गार्गी

Ans – (B)

18. 'गंगादेवी' के पति कौन थे?

(A) दण्डी

(B) जनक

(C) चंद्रादित्य

(D) कम्पनराय

Ans – (D)

19.'कम्पनराय' की पत्नी कौन थी?-

(A) गंगादेवी

(B) विजयांका

(C) विजयभट्टारिका

(D) गार्गी

Ans – (A)

20. अच्युतराय की पत्नी कौन थी?

(A) गार्गी

(B) विजयांका

(C) तिरुमलाम्बा

(D) गंगादेवी

Ans – (C)

21. वरदाम्बिका परिणय नामक चम्काव्य के रचनाकार कौन है?

(A) तिरुमलाम्बा

(B) विजयांका

(C) गार्गी

(D) गंगादेवी

Ans – (A)

22. आधुनिक काल की संस्कृत लेखिकाओं में कौन अतीव प्रसिद्ध है?

(A) विभाराव

(B) आभाराव

(C) क्षमाराव

(D) रमाराव

Ans – (C)

23. वनमाला भवालकर किस काल की संस्कृति - कवयित्री थी ?

(A) प्राचीनकाल

(B) अति प्राचीनकाल

(C) मध्यकाल

(D) वर्तमान काल Ans – (D)

24. विजय भट्टारिका किसकी पत्नी थी?

(A) चन्द्रादित्य

(B) चन्द्रगुप्त

(C) चन्द्रकिशोर

(D) चन्द्रशेखर

Ans – (A)

25. ऋग्वेद में कितनी मन्त्रदर्शनवती ऋषिकाओं का उल्लेख है?

(A) पञ्च

(B) चतुर्विंशति:

(C) विंशतिः

(D) चत्वारिंशत्

Ans – (B)

26. महाभारत में किस लेखिका का उल्लेख मिलता है?

(A) गार्गी का

(B) मैत्रेयी का

(C) सुलभा का

(D) यमी का Ans – (B)

27. गङ्गा देवी का समय क्या है?

(A) चौदहवीं सदी

(B) आठवीं सदी

(C) नवमीं सदी

(D) बारहवीं सदी

Ans – (A)

28. समाज की गाड़ी किससे चलती है?

(A) भाई और बहन

(B) पुरुष और नारी

(C) राजा और मंत्री

(D) दोस्त

Ans – (B)

29. सभी भाषाओं के साहित्य में कौन तत्पर है?

(A) पुरुष

(B) मंत्री

(C) स्त्रियाँ

(D) राजा

Ans – (C)

30. मैत्रेयी किनकी पत्नी थी?

(A) शंकराचार्य

(B) याज्ञवल्क्य

(C) दुर्वासा

(D) परशुराम

Ans – (B)

31. विजयांका किस वर्ण की थी?

(A) श्यामवर्ण

(B) श्वेत वर्ण

(C) रक्तवर्ण

(D) हरित वर्ण

Ans – (A)

32. 'नीलोत्पलदलश्यामा' किसे कहा गया है?

(A) मैत्रेयी

(B) विजयांका

(C) गार्गी

(D) यमी

Ans – (B)

33. नीलोत्पलदलश्यामा ..... सरस्वती ॥ श्लोक कहाँ से लिया गया है?

(A) अलसकथा

(B) भारत महिमा

(C) नीतिश्लोक

(D) संस्कृतसाहित्ये लेखिका

Ans – (B)

34. लौकिक संस्कृत के प्रथम कवयित्री कौन थी?

(B) विजयभट्टारिका

(C) विजयांका

(D) मैत्रेयी

Ans – (C)

35. 'श्यामवर्ण' कौन थी?

(A) गंगा देवी

(B) विजयांका

(C) गार्गी

(D) यमो

Ans – (B)

36. दण्डी ने सर्वशुक्ला किसे कहा?

(A) विजयांका

(B) गंगा देवी

(C) विजयभट्टारिका

(D) शीला

Ans – (A)

37. 'आत्मतत्व' की शिक्षा किसे देते हैं?

(A) इंद्राणी को

(B) गार्गी को

(C) यमी को

(D) मैत्रेयी को

Ans – (D)

38. दार्शनिक रूप में कौन वर्णित है?

(A) यमी

(B) मैत्रेयी

(C) अपाला

(D) गार्गी

Ans – (B)

39. 'गार्गी' किनके सभा में विदुषी थी?

(A) चंद्रगुप्त

(B) अशोक

(C) जनक

(D) दशरथ

Ans – (C)

40. गंगा देवी ने किस महाकाव्य की रचना की थी?

(A) शंकरचरितम्

(B) वरदाम्बिकापरिणयम्

(C) मधुराविजयम्

(D) कथामुक्तावली

Ans – (C)

41.'अच्युत राय' कहाँ के राजा थे?

(A) काशी के

(B) दरभंगा के

(C) चित्तौड़गढ़ के

(D) विजयनगर के

Ans – (D)

42. अच्युत राय का काल क्या है?

(A) अष्टमशतक

(B) चतुर्दशशतक

(C) पोडशशतक

(D) एकादशशतक

Ans – (C)

43. ऋग्वेद में कितनी महिला ऋषिकाओं का वर्णन प्राप्त है?

(A) 24

(C) 23

(B) 25

(D) 26

Ans – (A)

44. 'शंकरचरित' के रचनाकार कौन है?

(A) पण्डिता क्षमाराव

(B) वनमाला भालकर

(C) विजयांका

(D) मिथिलेश कुमारी मिश्र

Ans – (A)

45. सर्व शुक्ला सरस्वती' किसकी उक्ति है?

(A) याज्ञवल्क्य

(B) जनक

(C) बाणभट्ट

(D) दण्डी

Ans – (D)

46. जनक की सभा में शास्त्रार्थ कुशला कौन थी?

(A) सुलभा

(B) गार्गी

(C) मैत्रेयी

(D) यमी

Ans – (B)

47. दक्षिण भारतीय संस्कृत लेखिका कौन हैं?

(A) शीला भट्टारिका

(B) रामभद्राम्बा

(C) देवकुमारिका

(D) सभी

Ans – (D)

48. लौकिक संस्कृति साहित्य में लगभग कितनी कवयित्रियों के पद्य मिलते हैं?

(A) तीस

(C) चार सौ

(B) चौबीस

(D) चालीस

Ans – (D)